छाँव में धूप

एक हकीकत

कविता संग्रह

शिव प्रकाश चौधरी

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Shiva Prakash Chaudhary 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-987-6

Cover design: Deepak Katheria
Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: March 2026

नम्र निवेदन

“वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्तते”

आजकल कवि-कर्म कठिन माना जाता है। लब्धख्याति कविगणों के मध्य अपने को उपस्थापित करना श्रमसाध्य प्रतीत होता है। प्रज्ञावान् कवियों की पावन रचनाएँ अबाधगति से विश्व को प्रभावित कर रही हैं। वे सभी वन्दनीय हैं।

मुझ जैसा साधारण व्यक्ति का इस ओर दुस्साहस क्षमायोग्य है। मैंने कोई रचना नहीं की है। ‘छाँव में धूप’ (एक हकीकत) कविता संग्रह ‘करोना काल’ की देन है। संभवत: प्राक्तनी भावना ने अपनी शक्ति मेरी कलम में डाल दी और मन के भाव कुछ तितर-बितर रूप में सादे पन्नों पर रूक-रूक कर उभरते गये। मैंने जो कुछ भी सोशलमीडिया, प्रिंट मीडिया और टीवी पर देखा, उसी को एक स्वर प्रदान करता गया, जो आपके हाथों में है।

स्वर्गीय माता-पिता जी के श्रीचरणों में इसे समर्पित करते हुए अपनी धर्मपत्नी सुधा जी को इस प्रथम रचना की असल प्रेरणा मानता हूँ, जिनके स्नेहिल उपालम्भ ने इसे साकार किया। सुधी पाठकों से निवेदन है कि त्रुटियों पर ध्यान न देते हुए अंधियारी छाँव में खिली धूप की हकीकत को समझने का कष्ट करें।

लेखक

शिव प्रकाश चौधरी

अनुक्रमणिका

1. गुरुवन्दना	1
2. राष्ट्र-पक्षी और सेवक	2
3. 'ईश्वर-अल्लाह', दो भगवान - भारत	3
4. 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस-भारत'	4
5. 'ब्राह्मण-सम्मेलन'	5
6. 'क्या से क्या हो गया'?	6
7. 'मेडल ले लो, मेडल ले लो'	7
8. 'नेता जी मन्दिर में पिट गए'	8
9. 'हम हिन्दुस्तानी'	9
10. 'स्वनामधन्य कवि'	10
11. 'फिल्म बनी कश्मीर'	11
12. 'जय हो, जय हो, देश महान्'	12
13. 'हरदम बोलो-जय श्रीराम'	13
14. 'जिग्नेश मेबानी'	14
15. 'दु:ख काहे का बन्दे!'	15
16. 'मेरा देश निराला'	16
17. 'प्रकृति-प्रेम देश में छलके'	17

18. 'माँ दुर्गे! फिर एकबार तुम' 18
19. 'महाकाल! दे दो बरदान' 19
20. 'जीना है तो मरना सीखो' 20
21. 'सबला परी-समान' 21
22. 'दुनिया मायावी है बेटी' 22
23. 'बाबा शरणं गच्छामि' 23
24. 'बिन घुंघरु के बाजे पायल' 24
25. 'हे राम! बड़ा या जय श्री राम' 25
26. 'क्या इसको भी स्नेह कहूँ?' 26
27. 'सप्तर्षि झोंके से गिर गए' 27
28. 'केदारनाथ धाम, बाबा और सोना' 28
29. 'हनुमान नहीं भगवान, एक सेवक' 29
30. जून 'हूल दिवस-एक श्रद्धाञ्जली' 30
31. 'धरम कौन-सा वरण करुँ?' 31
32. 'मेरा राम हैं क्यों बदनाम?' 32
33. 'विद्या-मन्दिर - जय श्रीराम' 34
34. 'आदिवासी-चरण पखारूँ' 35
35. 'हर लो हर अभिशाप' 36
36. 'भक्त और अन्धभक्त' 37
37. 'अच्छा लगता जय श्री राम' 39
38. 'सभ्य समाज-सभ्य धर्म' 40

39. 'काँवड़ियों का रूप कराल' 41

40. 'बाबा और वैज्ञानिक' 43

41. 'यमुना करे पुकार' 44

42. 'बाबा वागेश्वर - भारतीय नारी' 45

43. 'साइखोम मीराबाई चानू-शान्ति अपील' 46

44. 'भरत - मिलन' 47

45. 'भारतीय नारी' 48

46. 'सभ्य देश शर्मिंदा क्यों' 49

47. 'नारी! नर के तुम प्राण' 50

48. 'वृद्धा में रह गई न जान' 52

49. "मैं हूँ असल पुजारी" 54

50. "नारी की स्वर्णिम बदहाली" 55

51. "मैं किसान हूँ भोला-भाला" 56

52. "दिव्य-दृष्टि है पाई हमने" 57

53. "ले लो बाबा का संदेश" 58

54. "भक्ति भाव क्या प्यारा है" 59

55. "तुम्हें दिखायें सीना-चीर" 60

56. "समझो अपना हिन्दुस्तान" 61

57. "आज का विद्यालय" 62

58. "कवि - धर्म" 63

59. "मनुज! अब तुमको है धिक्कार" 65

60. "कलियुग में सत्य युग" 66
61. "श्रीमराम मन्दिर और ताजमहल" 67
62. "सान्ता शान्त रहो अपने घर" 68
63. "अरावली के आँसू" 69
64. "दुर्लभे! तेरी याद रुलाती है" 71
65. "उपालम्भ" 72
66. "एक श्रद्धाञ्जली" 73
67. "शाहरूख क्या है चीज?" 74

1.
गुरुवन्दना

“करूँ नमन मैं हाथ जोड़कर
गुरुवर! तेरा ज्ञान महान्,
नेत्र खुले तेरी वाणी से
जग को क्या जानूँ अनजान?”
“जग में आकर देखा अबतक
राग-द्वेष का छद्म-वितान,
कैसे कोई तोड़ सकेगा?
दृढ़ बन्धन ऐसा इंसान।”
“अल्पबुद्धि मैं लिखने बैठा
‘एक हकीकत’ में कुछ ज्ञान,
क्षमा-याचना मेरे वश में
यही कामना करुँ निधान!”

2.
राष्ट्र-पक्षी और सेवक

(25 अगस्त 2020)

“राष्ट्र-पक्षी! तुम राष्ट्र-प्रमुख के
कर-कमलों से चुग लो दाना
शान्त, मनोहर, पुष्पाच्छादित दिखता उपवन बड़ा सलोना,
मत भूलो स्वजनों को,
जिसका दैव हमेशा बड़ा घिनौना,
भूख आग की, जल में प्यासा,
रोते लोग बिलखते बच्चे,
सुध लेने वाले हैं बेसुध,
देख सको तो निकलो बाहर,
मिल जायेगा नवल तराना।”
“सफल-सुरक्षित उपवन से तुम,
मत दो मुझको ऐसा ताना,
है हिम्मत तो खड़ा करो तुम,
स्वजनों के हित स्वर्ण-ठिकाना,
कैसे मानूँ? तुम्हें राष्ट्रद्विज! स्वजनों के दु:ख से बेगाना।”

3.
'ईश्वर-अल्लाह', दो भगवान - भारत

(19 जून 2021)

"ईश्वर अल्लाह दो भगवान
जय श्रीराम, जय जय श्रीराम!
"सुना बहुत था तेरा नाम
जन-जन माना एक समान,
फिर किसने डाला व्यवधान?
खून-खून प्यासा इंसान,
जय श्रीराम, जय जय श्रीराम!
ईश्वर अल्लाह दो भगवान
"अंग्रेजों की नीति निराली
फूट डाल किया घर खाली,
यही मार्ग सत्ता-काबिज का
आज मान बैठा इंसान,
जय श्रीराम, जय जय श्रीराम!
ईश्वर अल्लाह दो भगवान
"जहाँ अनीति नीति-समान
दो भागों में हैं भगवान,
जन-जन जहाँ न एक समान
वहाँ नहीं वसते भगवान,
जय श्रीराम, जय जय श्रीराम!
ईश्वर अल्लाह दो भगवान।''

4.
'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस-भारत'

(21 जून 12021)

"युगों-युगों के ज्ञान-वृक्ष से
हुआ प्रस्फुटित योग महान्
पतंजली -बाबा-गण मिलकर
खूब किया इसका गुणगान।''
"तन-मन दोनों होगा पावन
नित्य करो यौगिक व्यायाम,
सिंचित करते रहो बाग को
तभी मिलेगा इच्छित आम।''
"बाबा! मेरे रोम-रोम से
बहता श्रम-सीकर अविराम,
पेट अधभरा, खाली घर है
नहीं कभी मिलता आराम।''
"करूँ योग या जाऊँ बाहर
जहाँ भोग का अतुल वितान
शोभा पाता योग वहीं पर
जहाँ श्वजन खाता पकवान।''
"तुम्हें मुबारक योग-दिवस जी!
कोटि-अशीति हैं अनजान
पलता जीवन टन-अनाज पर
स्वास्थ्य-दशा बेहतर लो जान।''

5.
'ब्राह्मण-सम्मेलन'

(23 जुलाई 2021)

"ब्रह्मवेद-ज्ञानी ही भाई!
ब्राह्मण कहलाता है,
मिला नहीं ऐसा अब जग में
ऋचा समझ में आता है।"
"राजाओं से छूटा पाला
नेताओं को पकड़ लिया,
पार्टी सुखकर जिसको पाया
सरपट तुमने जकड़ लिया।"
"तुम अछूत को छूआ ऐसे
जैसे गंगाजल पावन,
बदल गए तुम, हम भी बदले
उभरा ब्राह्मण-सम्मेलन।"
"सम्मेलन से तुम विकास की
रेखा खींच न पाओगे,
बुद्धिहीन को पैसे देकर
अपना राज्य बनाओगे।"
"बहन बड़ी हो, बुद्धि लगाई
तुमने अलबेला रानी!
पकड़ों नाव सम्हलकर बहना!
कौन करेगा निगरानी?"

6.
'क्या से क्या हो गया'?

(28 जुलाई 2021)

"कुत्तों से लड़ कुत्ते मरते
पुलिस मरी है सीमा पर,
अपने खेत किसान मर रहे
डटे रहो तुम गद्दी पर।''
"छात्रों पर बरसाओ लाठी
करो तमाशा संसद में,
भूखे जन को तुम अनाज दे
मजे चखो अब जलसे में।''
"अच्छे दिन आने वाले हैं
इसी आस में मरते है,
पेट बड़ा है जिसका भाई!
कंकालों से डरते हैं।''
"चुप्पी को कमतर आँके हो
चिनगारी में फूल नहीं,
समय बदल जाता पल भर में
आर्ष-वचन निर्मूल नहीं।''

7.
'मेडल ले लो, मेडल ले लो'

(04 अगस्त 2021)

"ले लो, ले लो मेडल भाई!
हार तुम्हारी मुझे ने भायी,
ज़ोर लगाया दशकों पर भी
दश मेडल भी हाथ न आई।''
"मैं देता हूँ मन्त्र निराला
करो न अब तुम गड़बड़झाला,
नहीं लगेगा धन पर ताला
पड़े ने अब मेडल को लाला।''
"खूब खेलो इण्डिया
मत करो अब डांडिया,
फिट इण्डिया को लखकर तुम
चीयर फॉर इण्डिया।''
"तेल निकलता बालू से क्या?
उसी तरह मेडल भाया,
जितनी चीनी डालोगे तुम
मेडल-मीठा तुम पाया।''

8.
‘नेता जी मन्दिर में पिट गए’

(13 अगस्त 2021)

“पिटती जनता, पिटते लोग
देखो टीवी पर आक्रोश,
जन-नेता मन्दिर में पिट गए
जोर-जोर करते उद्घोष।”
“पीट-पीट कर जा पहुँचे हम
जहाँ न पीटा जाता है,
पिटूँ यहाँ भी, पिटूँ वहाँ भी
राह नजर नहीं आता है।”
“अत्याचार वहीं पर होता है,
जहाँ न शासन होता है,
रामराज्य का नाम बताकर
दशकन्धर बन जाता है।”
“मेरा पिटना, पिटना है
तेरा पिटना अफ़साना,
पिटते को जिसने पीटा है
जीते जी मर जाना।”

9.
‘हम हिन्दुस्तानी’

(13 फरवरी 2022)

‘हम हिन्दुस्तानी!’
“रंग-बिरंगी शैली अपनी
युगो-युगों की वाणी,
निर्भरता का ढ़ोल बजाकर
ऋण-थैली है तानी।”
हम हिन्दुस्तानी!
“जहाँ देवता राज-सरीखे
पूजक भिखमंगे बन बैठे,
एक वर्ग को दूध-मलाई
जल पीने की मची लड़ाई
है विकास मस्तानी।
हम हिन्दुस्तानी।”
“लोकतंत्र अलबेला मेरा
भूखे लोग, तंत्र बड़बोला,
संन्यासी का बढ़ता झोला
अब काहे पछतानी।
हम हिन्दुस्तानी!”

10.
‘स्वनामधन्य कवि’

(18 फरवरी 2022)

“प्रज्ञाबल और राजधर्म का
स्वर्णिम काल कहाँ पाऊँ?
नहीं मिलेगा अब दोनों पद
एक धर्म को अपनाऊँ।”
“बदल-बदल कर बात पुरानी
नवता का वर पहनाऊँ,
मिले प्रसिद्धि जिससे भाई!
गीत हमेशा वह गाऊँ।
“मित्र आज का तुम बन बैठे
धर्म नहीं कवि का भाई।
नेताओं की बात निराली
रास तुम्हें कैसे आई?”
“तुम ‘विश्वास’ जगत् में भाई!
बोली तेरी मधुर मलाई,
बात बनेगी धर्म-ध्वजा से
चाल कवि की अति दु:खदायी।”

11.
‘फिल्म बनी कश्मीर’

(16 मार्च 2022)

“पण्डित, मुल्ला सभी देख लो
फिल्म बनी कश्मीर,
दर्द दिया जिसने, देखो तुम
बहा रहा है नीर।”
“अनुपम रोया, तुम भी रो लो
देख बड़ा व्यापार,
पण्डित निशिदिन रोता आया
सुर-सरिता के द्वार।
“कोलाहल नेताओं में है
मैं ही उम्दा पीर,
मैं हूँ रक्षक, भक्षक थे वे
मेरे पास जमीर।”
“बात पुरानी, नये दौर में
कुछ दिखलाओ ऐसा
मरे साँप, लाठी बच जाये
काम करो कुछ ऐसा।”

12.
'जय हो, जय हो, देश महान्'

(26 मार्च 2022)

''तुम्हें मिलेगा राशन, भत्ता
गैस सिलिंडर और मकान,
कब देखा है? राजा मर्कट
हो अरण्य में सिंह महान्।''
''बाबा मर गए धर्म बदलकर
बने सनातन हम अनजान,
देश चला सकता है जिसके
पास पड़ा हो अद्भुत ज्ञान।''
''पीटो थाली तुम विकास की
यही तुम्हारी है पहचान,
अब न रहेगा दलित देश में
पिछड़े भी करते गुणगान।''

13.
‘हरदम बोलो–जय श्रीराम’

(17 अप्रैल 2022)

“जय श्रीराम जय, जय श्रीराम
हरदम बोलो जय हनुमान।”
दीनों पर तुम दया दिखाओ
सदा करो तुम अच्छे काम,
जय श्रीराम जय, जय श्रीराम
“पढ़ो, लिखो और बनो बहादुर
तभी मिलेगा धन और मान,
जय श्रीराम जय, जय श्रीराम
“वक्त बड़ा अनमोल सुना है
इसे करो न तुम नाकाम,
जय श्रीराम जय, जय श्रीराम
“लूटा है घर तेरा जिसने
जिसे न तुमसे कोई काम,
अभी न सम्हले भाई! समझो
एक दिन होगा काम तमाम,
जय श्रीराम जय, जय श्रीराम

14.
'जिग्नेश मेबानी'

(30 अप्रैल 2022)

"मेवानी तुम गलत नहीं
तुम दलित-ध्वजा फहराओगे,
तुम उस कुल के युवा कुशल
सुख सपनों में ही पाओगे।''
'देना होगा बलिदान तुम्हें
बनना होगा अब पत्थरदिल,
तप-तप कर और निखरना है
औरो की तरह मत बन बुजदिल।''
"दलितों का नेता बनकर जो
धोखा उनको ही देता है,
उसका भी पर्दाफाश करो
चुपचाप भवन में सोता है।''
"मिल जायेगा आशीष तुम्हें
बाबा और कांसी साहेब का,
पदचिह्नों पर उनके चलना
आगे कर मंजिल दलितों का।''

15.
'दु:ख काहे का बन्दे!'

"दु:ख में जन्म, इसी में जीवन
हर दिशि दु:ख के फन्दे,
जिनके हाथों में बल होंगे
वही उठाते सब पर डंडे
फिर दु:ख काहे का बन्दे!"
"रोना छोड़, समय को समझो
समय बड़ा बलशाली,
राजा रोता है महलों में
निर्धन-घर खुशहाली,
मत कर गड़बड़ धंधे,
फिर दु:ख काहे का बन्दे!"
"दया-धर्म की बातें कर के
सबको सुख देने के तड़के,
जिससे बात बने वह कहके
चमकाओ तुम धंधे,
फिर दु:ख काहे का बन्दे:"

16.
‘मेरा देश निराला’

(07 मई 2022)

“पुलिस-प्रशासन चुस्त हमारा
सबको देता न्याय,
बोलो झूठ जोर से भाई!
कहीं नहीं अन्याय।”
“कुरूक्षेत्र में मचा युद्ध, अब
देखो जनता लोग,
पुलिस-पुलिस में ठनी अभी तो
देखो नया प्रयोग।”
“चुप होकर घर में ही बैठो
बोलो सुंदर वाणी,
नूतन शासन चुप ही देखो
तुम विकास मस्तानी।”

17.
‘प्रकृति–प्रेम देश में छलके’

(17 सितम्बर 2022)

“बस, चीतों की एक कमी थी,
युवा–देश में रक्त नही है
भोजन भी परिपक्व नहीं है,
दौड़ लगाये कौन सड़क पर?
बस, धावक की एक कमी थी।”
“प्रकृति प्रेम उमड़ा है कैसे?
गंगा स्वच्छ हुआ है जैसे,
गति विकास की मापें कैसे?
बलशाली वन चीता जैसे,
भारत धन्य हुआ है जैसे,
भूखे–जन रोटी को तरसे,
मन्दिर में माखन ही बरसे
फिर विकास को तुम क्यों ललसे?
राम–नाम का जाप करो तुम
भवसागर उतरोगे ऐसे
प्रकृति–प्रेम उमड़ा है कैसे?”

18.
‘माँ दुर्गे! फिर एकबार तुम’

(07 अक्टूबर 2022)

“लक्षाधिक देवों की भूमि
भारत-भू तुम अति पावन,
जहाँ ग्रीष्म का आतप सुन्दर
झर-झर करता है सावन।
“सिन्धु घाट जिसके अतीत में
साम-गान से पावित लोग,
वहाँ आज पाखण्ड प्रबल है
नहीं बचा सच का संयोग।”
“दंभ-यान पर बैठा शासक
कहता खुद को है बलवान,
किस विकास-पथ बैठा भारत?
करता है अपना गुणवान।”
नारी-शक्ति पूजक ही तो
नारी का करता अपमान,
माँ दुर्गे! फिर एक बार तुम
खड्ग उठाकर करो तमाम।”

19.
‘महाकाल! दे दो बरदान’

(12 अक्टूबर 2022)

“लंगड़े, लूल्हे और अपाहिज
सबके सुनते भोले नाथ,
देखो, चरणों में लोटे हम
शीश झुका कर एक अनाथ।”
“पार लगाओ बाबा मेरा
मैं भी तेरा अनुकम्पी,
गोमाता ‘लंपी’ से शापित
पुरुषोत्त्म लेते झपकी।”
“जन को छोड़, देव को पूजूँ
धर्म हमारा प्यारा है,
कर विकास को जग में ऊँचा
तेरा एक सहारा है।”

20.
'जीना है तो मरना सीखो'

(19 अक्टूबर 2022)

"कहीं रो रहा भूखा-नंगा
कहीं सड़क पर देखो दंगा,
रोती अबला, पिसते लोग
नेता कहते सब हैं चंगा।''
"देवो को लेकर है पंगा
तुम्हीं नहाओ गंदी गंगा,
मुझे चाहिए रोटी-अंगा
जश्न मनाते आज लफंगा।''
"बिकते नेता हैं पैसों पर
उसे नहीं जनता का ध्यान,
नैतिकता और पावनता का
वही छाँटते अपना ज्ञान।''
"जीना है तो मरना सीखो
कदम-कदम पर लड़ना सीखो,
कभी न बनता गीदड़ राजा
भाई! अब लो यह तुम जान।''

21.
‘सबला परी–समान’

(17 नबम्बर 2022)

“पल–पल सुनता आज देश में
महिलाओं पर अत्याचार,
नारी शक्ति पर बल देने
वाले फिर क्यों है लाचार?”
“दलिता का अपमान
देश का बना आज सम्मान,
मानूँ इसकोएक हकीकत
भाग्य–भरोसे आम।”
“माता, बेटी, बहू निराली
भारत की पहचान,
अबला को छोड़ो भाई! अब
सबला परी–समान।”

22.
‘दुनिया मायावी है बेटी’

(23 नवम्बर 2022)

“सुन्दर नारों से भी सुन्दर
सुन्दर घर में लगती हो,
सुन्दर-सुन्दर ड्रेस पहन कर
सड़को पर क्यों डरती हो?’’
“बच्ची! तुम हो बड़े काम की
मैं दूँगा तुमको वरदान,
पार लगा दो मेरी नैया
सब कुछ है तुम पर कुर्बान।’’
“दुनिया मायावी है बेटी
रहता उस पल मैं भी मौन
बीच सड़क जब तेरी इज्जत
लूटे चाहे जो भी कौम।’’

23.
'बाबा शरणं गच्छामि'

(23 जनवरी 2023)

"भूखे बिलख रहे है भाई!
कहीं बिलखती सबला नारी,
हाँफ-हाँफ कर युवा बिलखते
बाबा तेरी बलिहारी।
बाबा शरणं गच्छामि।
"बाबामय भारत है भाई!
फिर भूखो की फौज हमारी
गर बल है बाबा में सच्चा
देश खा रहा है क्यों गच्चा?
"दुनिया अजब-गजब है भाई!
बाबा को भी सत्ता भायी,
मिले यहाँ जब खूब मलाई
भूखे भजन करो तुम भाई।''

24.
‘बिन घुंघरु के बाजे पायल’

(07 फरवरी 2023)

“कहीं खड़े है शिक्षक मानी
खड़े कहीं बाबा अभिमानी,
अपनी–अपनी बात बताकर
ज्ञान बाँटते हैं अज्ञानी।”
“सोने की चिड़िया है घायल
हम तो हैं नेता के कायल,
मौन–व्रती राजा के युग में
बिन घुंघरु के बाजे पायल।”
“किस मंत्री का क्या पद भाई
बात अभी तक समझ न आई,
पीछे–पीछे अवतारी के
नाम जप रहे, करे बराई।

25.
‘हे राम! बड़ा या जय श्री राम’

(16 अप्रैल 2023)

“एक विवश करता जीने को
दूजे में है शान्ति महान,
हाँडी–काठ एक के साथी
जग पाने को सब कुर्बान।”
“हेराफेरी के चक्कर में
भागमभाग मचा तूफान,
सत्ता देता है सस्ते में
दूजा देता है आराम।”
“एक घोषणा जीवन–पथ की
दूजे में शाश्वत विश्राम,
राम–नाम साधन जीवन का
पूरा करता सारा काम।”

26.
‘क्या इसको भी स्नेह कहूँ?’

(23 मई 2023)

“जिस पादप को सींचा हमने
तन-मन-धन-जीवन देकर,
उसी वृक्ष ने झटक दिया कर
छाया-आश्रय न देकर
क्या इसको भी स्नेह कहूँ?”
“अपने-अपने लिए जूझता
स्थावर-जंगम धरती पर,
जिसके खातिर मरते हैं हम
उसे नहीं सुध अपनों पर
क्या इसको भी स्नेह कहूँ?”
“क्या रक्खा जीने में बुद्धू!
जाओगे क्या लेकर तुम,
राजा-रंक सभी जाते हैं
उसी पंथ पर हम और तुम,
क्या इसको भी स्नेह कहूँ?”

27.
‘सप्तर्षि झोंके से गिर गए’

(29 मई 2023)

“महाकाल भू-शायी हो गए
मन्द पवन के झोकों से,
क्या संयोग प्रबल है भाई!
या प्रयोग है खोटे से।”
“प्रभु का गिरना पतन नहीं है
उत्थान-पतन से हैं वे दूर,
खामी है मुझमें ही प्रभुवर!
लेन-देन में कहाँ कसूर?”
“विकास ये बुलंद है
धर्म तो प्रचण्ड है,
लूटता जहान को
हाथ में भुजदंड है।”

28.
‘केदारनाथ धाम, बाबा और सोना’

(18 जून 2023)

“बाबा के घर चोरी देखो
नंदी टक-टक देख रहा,
धर्म-धरा पर बचा नहीं अब
पण्डों के घर थाल सजा।”
“क्या पण्डों की होती परीक्षा?
जन्मजात एजेंट बना,
सोमनाथ मंदिर का पण्डा
महमूदों का मंत्र बना।”
“पावन है देवों का मन्दिर
धन का नया खजाना है,
दोगे जितना दान भक्तगण!
उतना ही शंख बजाना है।”

29.
‘हनुमान नहीं भगवान, एक सेवक’

(21 जून 2023)

“तुम मनोज, मैं पवनपुत्र हूँ
तेरी-मेरी यारी,
नष्ट किया तन तेरा जिसने
गुरु अपना बलिहारी।”
“तेरी हस्ती से जग बनता
मैं उसका अधिकारी,
राम नहीं साकार आज
जग देखे छवि निराली।”
“मेरा घर जन-जन के अन्दर
महल विराजे तेरा,
कैसे मानू? सुधी तुम्हें मैं
कैसे चतुर चितेरा?”

30.
जून 'हूल दिवस–एक श्रद्धांजली'

"किसे याद है 'हूल दिवस'?
बतलाओ भारत–वासी,
संथालों के अमर पुत्र भी
झूले थे हँसकर फाँसी।"
"सन् सत्तावन से भी पहले
सिद्धो–कान्हो–भैरव–चांद,
अंग्रेजों को धूल चटाई
छिप–छिप रहते अपनी मांद।"
"खुलकर युद्ध किया चारों ने
दे दी हँसकर अपनी जान,
आजादी के दीवाने थे
लेकिन जनता है अनजान।"
"करुँ नमन पावन पुत्रों को
जिनके नाम परम गुणधाम,
तुम भारत के सिद्ध–चाँद थे
कान्हो–भैरव कृष्ण–समान।"

31.
'धरम कौन-सा वरण करुँ?'

(05 जुलाई 2023)

''जिसने जख्म दिया जीवन में
भूख-प्यास-संताप सभी,
ऊँच-नीच के दल-दल में फँस
किस मन्दिर में चरण गहूँ?''
धरम कौन-सा वरण करूँ?
''देवालय अब मॉल बन गया
प्रहरी-पण्डा-हाथ -घड़ी,
सुर भी भूखे हैं प्रसाद के
किस विधि अर्पण आज करूँ?
धरम कौन-सा वरण करूँ?
''नीति, प्रीति, नैतिकता भी
पैसों के हैं पास खड़ी,
राष्ट्र प्रेम पन्नों पर दिखता
रामराज्य की बात करूँ,
धरम कौन-सा वरण करूँ?

32.
‘मेरा राम हैं क्यों बदनाम?’

(01 जुलाई 2023)

“खाते-पीते, उठते-बैठते
लेते हैं, जिनका हम नाम,
धर्म-नाम पर बेचा हमने
मर्यादा पुरूषोतम राम,
मेरा राम है क्यों बदनाम?”
“जो है हर कण-कण में व्यापत
मन-मन में सुन्दर अभिराम,
सौदा करके हमने उनका
नाम किया जग में बदनाम,
मेरा राम है क्यों बदनाम?”
“नीति, अनीति से ऊपर जो
उन्हें घसीटा अपने काम,
रथ पर आगे बैठाकर हम
मचा दिया जग में कोहराम,
मेरा राम है क्यों बदनाम?”
“शबरी भोजन करने वाला
छीना उनका आज निबाला,
यही धर्म बतलाया उसने
यही दिया क्या हमको ज्ञान?
मेरा राम है क्यों बदनाम?”

"खींचा सबने अपने दल में
उन्हें नहीं है अब आराम,
अपना-अपना बता बताकर
खोली देखो नई दुकान
मेरा राम है क्यों बदनाम?"
"रोता जब तक दीन-दलित है
मिले न सबको अच्छा काम,
घूमो तुम अच्छे वाहन में
चाहे कर लो चारो धाम,
मेरा राम है क्यों बदनाम?"
"सुन्दर-सुन्दर महल बनाकर
लूटो यश, लूटो सुरधाम,
मेरा राम बसे कुटिया में
वे तो हैं भाई! अन्तर्याम,
मेरा राम है क्यों बदनाम?"
"जग जा भाई! जग जा बहना
देखो संकट बड़ा महान्
राम बड़ा है जग में सुन्दर
सबसे ऊँचा है हनुमान,
मेरा राम है क्यों बदनाम?"

33.
'विद्या-मन्दिर - जय श्रीराम'

(03 जुलाई 2023)

"जग-प्रसिद्ध है विद्या-मन्दिर
विद्या-देवी का आराम,
लगा रहे हैं नारे अब तो
युवा विजय के जय श्रीराम।"
"थकी शारदा वर देकर अब
यहाँ नहीं अब उनका काम,
गली-गली चौराहे देखो
बजता नारा जय श्री राम।"
"मैंने पोथी पढ़ी नहीं है
संविधान क्या जानूँ?
जिससे दाना मिलता मुझको
उनको ही अपना मानूँ।"
"नमन करो स्वीकार शारदे!
रसना बैठो तुम अविराम,
करुँ वन्दना मन से तेरी
जिह्वा बोले सीता-राम।"

34.
‘आदिवासी–चरण पखारूँ’

(06 जुलाई 2023)

“बात समझ लो वन–वासी तुम
तुम मेरे भगवान,
पाँव पखारूँ आज तुम्हारे
कल दूँगा बलिदान।
“वक्त–वक्त की बात निराली
यह चुनाव न जाये खाली,
मूत्र–विसर्जन से दूषित को
करूँ आरती लेकर थाली।’
“प्रथम नागरिक को देखो तुम
भारत में कितना सम्मान?
देवों से हैं दूर खड़े वे
तेरा क्यों इतना गुणगान?’’
“सत्ता–पद करवाता जग में
काम अनूठा यह लो जान,
देश–धर्म क्या? किडनी दे दूँ
सत्ता को इन्द्रासन मान।’’

35.
'हर लो हर अभिशाप'

(07 जुलाई 2023)

"दिल वालों की दिल्ली में
सज गया दिव्य दरबार,
बाबा! पर्ची मेरी निकालो
मैं हूँ बिन घर-द्वार।"
"दिव्य-भूमि यह दिव्य-दिव्य है
इसका है इतिहास,
बाबा वागेश्वर हर लेंगे
दु:ख हमको विश्वास।"
"दिव्य-ज्ञान साकार हुआ अब
दे दो बाबा! कुछ वरदान,
आने वाली विपदा का भी
कुछ कर लो संज्ञान।"
"अन्तर्यामी लिख पर्ची पर
हरता दु:ख संताप,
संजय-सी इस दिव्य-दृष्टि से
हर लो सब अभिशाप।"
"बन्द करो वैद्यों की पर्ची
मँहगा यह व्यापार,
बिन पैसों से हो इलाज जब
वागेश्वर-दरबार।"

36.
'भक्त और अन्धभक्त'

(12 जुलाई 2023)

''देवों की धरती है भारत
सभी भक्त कहलाते हैं,
निशि-दिन सेवा करने वाले
'अन्धभक्त' बन जाते है।''
''बिना कान के सुन ले सब कुछ
बिन रसना ललकार भरे,
समझो भक्त वही है अन्धा
सुख-दुःख जय-जयकार करे।''
''भक्तों में भी अन्धभक्त
सिंहासन शोभा पाते है,
चरण-वन्दना करने वाले
'महाभक्त' कहलाते है।''
''भक्ति-भाव का संगम देखो
पेटभरा बाबा के पास,
जाकर पाचन-चूरन मांगे
असल भक्त-घर आज उपास।''
''शब्द बना अपशब्द आज
देखो प्रभु की तुम लीला,
'अन्धभक्त' और 'भक्त' भिड़े हैं
कृष्ण-रक्त और हो पीला।''

“भक्ति-भाव थोथे दिखते हैं
प्रेमभाव है दूर खड़ा,
लूटो जग को बता-बताकर
प्रभु जी तेरे पास खड़ा।”

37.
'अच्छा लगता जय श्री राम'

(14 जुलाई 2023)

''डंका बजता आज विश्व में
लोकतंत्र का राज,
कहीं 'बॉस' तो 'शेर' कहीं है?
मिलता मुझे अनाज।
''लोकतंत्र की जननी हूँ मैं
मुझको इस पर नाज,
बली बात बोले बढ़ चढ़ कर
कमरा-कैद आवाज।''
''लोकतंत्र में जननी दुर्बल
दुर्बल है सन्तान,
इसीलिए मारक-अस्त्रों से
बचा रहे हैं प्राण।''
''मचता धूम विश्व में अपना
शिक्षा पर होता है काम,
घर-घर में उद्योग दमकता
फिर अनाज पर क्यों कोहराम?''
''शिक्षा और अर्थ का रिश्ता
मनभावन होता अभिराम,
तभी शोभता लोकतंत्र यह
अच्छा लगता जय श्रीराम।''

38.
‘सभ्य समाज–सभ्य धर्म’

(09 जुलाई 2023)

“सभ्यों का हो रहा समागम
दिखे न निर्धन लोग,
धर्म बना है दास अर्थ का
चंगा हैं सब लोग।”
“काम–मोक्ष की कामना
करते हैं सब लोग,
धर्म–अर्थ का तांडव देखो
लगता नया प्रयोग।”
“सुन्दर–सुन्दर नारी देखी
पीताम्बर थे लोग,
बाबा चाल–चरित्र उचारे
लड्डू का है भोग।”
“देव वधिर दिखता कलियुग में
लगा जोर का नारा,
राजा, मंत्री, अर्थवान् को
दिखता धर्म किनारा।”
“धर्म असल होता क्या भाई?
बतलाओ तुम आज,
बाबा भोग लगाते बैठे
रोटी नहीं समाज।”

39.
'काँवड़ियों का रूप कराल'

(12 जुलाई 2023)

"सावन मास सुहाना सजता
रिमझिम करे फुहार,
रूप भंयकर देख भक्त का
भोले की जयकार।''
"सज-धज काँवड़ लिये चले हम
हरिद्वार की ओर,
सत्ता का भी मिला समर्थन
संरक्षा पुरजोर।
"देख भयानक दृश्य मार्ग में
दिखा न औढ़रदानी
भक्त पीटता अन्य भक्त को
करता है मनमानी।''
"काँवड़ियों का रौद्ररूप लख
भक्ति-भाव थर्राता है,
दिखता सुन्दर दृश्य मगर
धर्मांध नजर ही आता है।''
"बाबा भोले! क्या बतलाऊँ?
किसे धर्म समझाऊँ?
पावन गंगाजल से कैसे?
जन की प्यास बुझाऊँ?''

“कांधे पर कॉवड़ लेकर मैं
गंगाजल भरकर लाऊँ,
बाबा तुम ऐसा वर दे दो
नीलकण्ठ कहलाऊँ।

40.
‘बाबा और वैज्ञानिक’

(14 जुलाई 2023)

“बड़े-बड़े ज्ञानी, विज्ञानी
चिन्तन में हैं लीन,
रंग-बिरंगे परिधानों में
बाबा पहुँचे चीन।”
“बाबा का आसन रंगीला
पुष्प-सुवासित जीवन-लीला,
करतब नया-नया दिखाकर
फन्दा डाले पीला-पीला।”
“कोई कहता पीर बड़ा मैं
कोई बाघम्बर बाबा,
सबकी विपदा लूँगा हर मैं
मैं त्रिकालज्ञ हूँ, यह दावा।”
“सुन्दर नारी, सभ्य समाज
सत्संगों का जमघट आज,
नये-नये रोगों का बाबा
करता चुटकी एक इलाज।”

41.
'यमुना करे पुकार'

(14 जुलाई 2023)

"खिली सभ्यता सरिता के तट
नदियाँ स्वर्ग-समान,
गंगा, यमुना और पयस्विनी
करती हरदम अमृत-दान।''
"अमृत बन बैठा विष देखो
किसका कृत्य महान्?
लूटी नदियाँ किसने मेरी?
अपराधी पहचान।''
"पाकर कोटि अनेक आज भी
दोहन के सरताज
लूटा तट और पानी जिसने
घर बैठा है आज।''
"कालिन्दी को किया कलंकित
कर्म अनोखा मान,
नेता, धन्ना सेठ, बली जन
तुम पर सब कुर्बान।''
"जिसने प्राण दिये उनका ही
करते हम नुकसान,
आयेगा एक दिन ऐसा भी
जल-बिन मछली जान।''

42.
‘बाबा वागेश्वर – भारतीय नारी’

(15 जुलाई 2023)

“वागेश्वर दिखते हैं भोले
मार्मिक, धार्मिक उनके बोल,
ब्रह्मचर्य-व्रत-धारी ब्राह्मण
नारी-ज्ञान बड़ा अनमोल।”
“सभ्य, सुशीला, सजधज बैठी
सुन्दर ललना उनके पास,
मर्कट-सदृश आचरण दिखता
बाबा क्यों न उड़े आकाश?”
“दिखता मंगलसूत्र और माथे
पर खिलता दिव्य लाल,
धर्मशास्त्र और राजनीति पर
भाषण देता, एक मिसाल।”
“खाली प्लाट या हुई ‘रजिस्ट्री’
बाबा की पहचान भली,
हँसी और मुस्काती मधुरा
सरपट आगे दौड़ चली।’

43.
'साइखोम मीराबाई चानू-शान्ति अपील'

(18 जुलाई 2023)

''मीरा के मन की व्यथा
पीड़ा मणिपुर जान,
मीरा फिर तुम एकबार
अब करो हलाहल पान।''
''जलता है जल जाये कोई
मर जये इंसान,
मैं तो अच्छे दिन खातिर
दे दूँगा अब प्राण।''
''लाठी खाकर मरे कहीं जन
बुलडोजर लेता है प्राण,
काँवड़िये को कम मत आँको
मार्ग मचाते हैं तूफान।
''काम बहुत बाँकी है मीरे!
तुम भोली बिल्कुल अनजान
चलता हूँ कर्तव्यकाल में
बिना किये जन का मैं काम।''
''सुख-दुख से ऊपर होकर तुम
करो सूक्ष्म व्यायाम,
सही वक्त और सही काल में
रखूँगा तुम पर भी ध्यान।''

44.
‘भरत – मिलन’

(19 जुलाई 2023)

“तुम चिराग से बने चांद अब
दूँगा हरदम रश्मि महान्
कभी ने होगा दिवस अमावस
करो दिवाकर का गुणगान।’’
“मैं हूँ तेरा चाचू चिंतक
मुझे आज है तुमसे काम,
पास रखा है पारस मेरे
बन जा अब असली हनुमान।’’
“पिता-तुल्य कहकर बेटे! तुम
ले ली मेरी आधी जान,
डूब रही है मेरी नैया
तिनका बन रख ले तू प्राण।’’
“तप कर सोना और निखरता
उसी तरह खुद को तुम मान,
घर भी दूँगा, वर भी दूँगा
दूँगा अब खुलकर सम्मान।’’

45.
'भारतीय नारी'

(20 जुलाई 2023)

"त्रेता युग ने दर्द दिया जो
पूर्ण किया द्वापर तुमने,
माँ की इज्जत क्या लोगे तुम?
कलियुग का है क्या कहने?''
"नारी में गर शक्ति होती
रावण में होता इंसान,
नारी बिन नर कैसे करता?
नारी का जग में अपमान।''
"गरिमा अबला की बतलाकर
सबल पक्ष बतलाते हो,
दूध पिआ जिस माँ का तुमने
नंगे आज घुमाते हो।''
"जिसने देखे दृश्य मनोहर
नहीं मनुज की वह सन्तान,
धर्म-आवरण-ढ़का पुरुष वह
बिन नारी जन्मा इंसान।''
"मेरी इज्जत के रखवाले
फिर लेंगे अवतार यहाँ,
दु:शासन यमपुर जायेगा
क्लीव-जगत में ज्ञान कहाँ?''

46.
‘सभ्य देश शर्मिंदा क्यों’

(21 जुलाई 2023)

“सभ्यों के इस सभ्य देश में
सभ्यों से है सजा समाज,
आर्य ध्वजा-वाहक हो जिसका
सनातनी का है यह राज।”
“क्या थे? क्या हो गए आज हम?
कहने को कुछ बची न बात,
सभ्य सुबकते सदन-मध्य हैं
सभ्यों का देखो उत्पात।”
“रोती जननी लोकतंत्र की
क्यों भारत माता बेहाल?
जननी और ललना दोनों ही
रोती हरदम हैं इस काल।”
“जहाँ न बाला की इज्जत है
चहुँदिशि जननी की चीत्कार,
तुम्हें मुबारक सभ्य देश हो
जनता करती हाहाकार।”
“यहाँ दधीचि अस्थि दानकर
खींचा भारत एक मिसाल,
रही न अब भारत माता है,
पिता कहो उनको अब लाल।”

47.
'नारी! नर के तुम प्राण'

(22 जुलाई 2023)

"क्षीर-नीर में सोये नर की
चरण-सेविका-कृत्य महान्,
फिर किस आनन नारी कहती?
करो मनुज मेरा सम्मान।"
"दूषण था या कोई विभूषण
अग्नि-परीक्षा एक निदान,
संग तुम्हारा नर को भाता
कमल-पत्र-गत-नीर समान।"
"नव्य-नवोढ़ा चीर-हरण से
लिया न तुम कुछ भी संज्ञान,
पौरुष नर का देख वहाँ भी
समझ न पाया नर का ज्ञान।"
"मुझे बताओ मेरी माते!
दिया मनुज कब-कब सम्मान?
मैं अबोध जानूँ क्या जग को?
तुमसे पाया जन्म महान्।"
"डंका बजता आज विश्व में
दिया दिखा तुम अपना ज्ञान,
तब तक हक काफूर रहेगा
मौन रहोगी अपना मान।"

“नारीवाद गौण क्यों जग में
कब तक भोगोगी परिणाम?
उठो, बनो अब दुर्गा देवी
करो दनुज का काम तमाम।”

48.
‘वृद्धा में रह गई न जान’

(23 जुलाई 2023)

“भारत माता झाँक रही है
भाग रही उनकी सन्तान,
देश बुरा या बुरी नीति है
वृद्धा में रह गई न जान।”
“सुन्दरियों से किस्सा सुनकर
टीवी देखूँ उच्च मुकाम,
धन और मान मिले जिस धरणी
वहाँ पहुँचते हर इंसान।”
“अच्छे-अच्छे नारों से अब
देश बनेगा स्वर्ग-समान
युवा खोजता स्मार्ट सिटी अब
कहाँ गया अब‘सांसद-ग्राम?”
“देश अनोखा यह जरुर था
क्यों अब यह इतना बदनाम?
अपराधी निर्भीक विचरता
सज्जन कैद करे कोहराम।”
“जन होकर जन ही को मारे
कहे न्याय है यही महान्
इसीलिए हम भाग रहे हैं
छोड़ रहे हैं हिन्दुस्तान।”

“करों न चिन्ता भारत माते!
दिन सुधरेगा निश्चित जान,
न्याय व्यवस्था और सुशासन
फिर देखेगा हर इंसान।”

49.
“मैं हूँ असल पुजारी’’

(26 जुलाई 2023)

“सत्तर चूहे खाने वाली
हज पर निकली बिल्ली,
आग जला कर हवन करूँ मैं
मंगल गाओ दिल्ली।’’
“सनातनी हिन्दू हूँ भाई!
मत कह मुझे जुआरी,
पूजा-पाठ मगन रहता हूँ
मैं हूँ असल पुजारी।’’
“राग-द्वेष से ऊपर उठकर
सबका हित मैं साधू,
अन्न-दान करके तुमको मैं
खुद खाता हूँ काजू।’’
“काम करोगे जग में जैसा
फल वैसा पाओगे,
रोपे जब पादप बबूल तुम
आम कहाँ पाओगे?’’
“बोल बड़ा अनमोल जगत में
इसीलिए रहता हूँ मौन,
गर बोलूँ मैं बात-बात पर
समझेगा हमको फिर कौन?’’

50.

“नारी की स्वर्णिम बदहाली”

(27 जुलाई 2023)

“महापुरुष पूजन पर बैठे
चीख मचाते लोग,
बाला विलख रही सड़कों पर
नग्न–नृत्य संयोग।”
“कैसा देश? नागरिक कैसा?
भरत–वंश का भारत कैसा?
राजा और प्रजा दोनों ही
अन्धे लगते मानो जैसा।”
“दिखा दिया भारत ने जग को
लोकतंत्र पावन अपना,
नारी का कुछ मोल नहीं अब
भारत में जीना सपना।”
“भस्म लगाने वाले बाबा
ताप रहे हैं जलती लाश,
सत्ता हिलती देख भूप जी
देखो कितना आज हताश?”
“मर जाउँ, कल्लोल करूँ मैं
सुनने वाला बहरा है,
जिनकी आँखे लाल–लाल हैं
घाव उसी में गहरा है।”

51.
‘‘मैं किसान हूँ भोला-भाला’’

(27 जुलाई 2023)

‘‘ट्रीलियन-मीलियन मैं क्या जानूँ?
करता हूँ खेतों में काम,
सिर से चूता प्रेम-पसीना
पैर न देखे सुख-विश्राम।’’
‘जिस दिन ट्रीलियन ढ़क देगा तन
तुझ-सा पीताम्बर-परिधान,
जानेगा इतिहास हमारा
विश्व करेगा तब गुणगान।’’
‘‘सूखी रोटी से टपकेगा
अमृत-रस निश्चित यह जान,
जिसने जाना अन्न देवता
मर्म यही जीवन का मान।’’
‘‘जहाँ प्रफुल्लित हर किसान हो
गाता पुरबैया-मल्हार,
समझो देश सही पथ पर है
सबको मिलता है उपहार।’’
‘‘बातों की गर बात करूँ मै
बातों में बीता व्यापार,
जिस दिन मूल्य मिलेगा मन भर
धूम मचेगा तब त्योहार।’’

52.
“दिव्य-दृष्टि है पाई हमने’’

(27 जुलाई 2023)

“‘संजय’ का इतिवृत्त पुरातन
गाए वेद-पुराण,
दिव्य-दृष्टि पाई थी जिसने
गुरु की महिमा अद्‌भुत जान।’’
“क्या नेता? और क्या अभिनेता?
इनके आगे गौण,
बड़े-बड़े पानी भरते हैं
राजा भी हैं मौन।’’
“‘अन्धभक्त’ ‘संजय था पहला
मैं कलियुग-निष्णात,
घर बैठे ही बन्द करा दूँ
पुलिस करुँ तैनात।’’
“मेरी महिमा बड़ी निराली
न्याय-पक्ष हैरान,
धर्म-देश बचाने वाला
बचा एक इंसान।’’
“जय हो, जय हो, संजय की जय
हारा हर इंसान,
‘मिश्रा’ कुल भूषण तुम ही हो।
जग तुम पर कुर्वान।’’

53.
“ले लो बाबा का संदेश’’

(30 जुलाई 2023)

“‘जय जवान’ अब भूल चुका हूँ
‘जय किसान अब नहीं शेष,
‘जय विज्ञान’ चन्द्र पर पहुँचा
मेरी माटी, मेरा देश।’’
“स्वर्ग-समान बना है देखो
भारत में अब दु:ख न क्लेश,
दिये जलाओ, घर-घर मन्दिर
बना दिया है धार्मिक देश।’’
“बच्चों! समझो अपनी माटी
प्यारा होता अपना देश,
भाग रहे हो किस खातिर तुम?
ले लो बाबा का संदेश।’’
“नारी की पूजा होती है
पूजा जाता पुरुष विशेष,
धर्म-मर्म मैं क्या बतलाऊँ?
रोम-रोम बसता सर्वेश।’’
“किस पागल ने कहा धर्म को
राजनीति का एक अफ़ीम?
भूखे भजन सुनाओ प्रभु को
स्वर्ग-द्वार खोलेगा चीन।’’

54.
“भक्ति भाव क्या प्यारा है’’

(01 अगस्त 2023)

“रोने वालों के आनन में
हँसी-खुशी के मंजुल मेल,
पूरब से पश्चिम तक पहुँचा
देश-प्रेम का अद्‌भुत खेल।’’
“लगी हुई है आग कहीं तो
गोली चलती मेरी रेल,
शान्ति-दूत बन शासन देखे
मरने की है ठेलमठेल।’’
“सत्य-अहिंसा आज गर्त में
राष्ट्रवाद का नारा है,
‘जन नायक’ मन्दिर में बैठे
भक्ति-भाव क्या प्यारा है?’’
“बहन-बेटियाँ नहीं सुरक्षित
देश मचा है भागमभाग,
अद्‌भुत दृश्य युवा के आगे
क्लीव-सदृश देखो बिन आग।’’
“मत बोलो, भारतवासी हम
विश्वगुरू बन जायेंगे,
माँ की इज्जत आज दाँव पर
जीते जी मर जायेंगे।’’

55.
“तुम्हें दिखायें सीना-चीर’’

(02 अगस्त 2023)

“देश लड़ रहा देशों से
लड़ते अपने में इंसान
देखो लहू बना है पानी
दूर खड़ा अपना भगवान।’’
“अमृतकाल’ कहा है जिसने
उसे अमरता का क्या ज्ञान?
पल-पल साँसें थमती जग में
मनुज देखता है हैरान।’’
“जहाँ न खाने को है दाना
नहीं सुलभ है निर्मल नीर,
माँ-बहनों की क्या है इज्जत?
खींच रहा जग उसका चीर।’’
“अमृतकाल मुबारक तुमको
तुम्हीं देवता, तुम हो पीर,
अपना क्या? हनुमान नहीं जो
तुम्हें दिखायें सीना चीर।’’

56.
"समझो अपना हिन्दुस्तान"

(03 अगस्त 2023)

"बचपन से सुनता आया हूँ
दो कौमों की अद्‌भुत जंग,
मरता कौन? मारता किसको?
हो जाने पर सब हैं दंग।"
"लेते भाग निकम्मे युवजन
जिन्हें नहीं है कोई काम,
माता रोतीं, पिता बिलखते
कहाँ गया बालक अभिराम?"
"झोंक आग में मेरे बच्चे
करता वो घर में विश्राम,
जब तक समझोगे तुम बालक!
कैद कटेगी उम्र तमाम।"
"किस लालच दंगाई हो तुम
पद पाओगे बड़ा महान्?
सदियों से खेला है जिसने
समझ गये, तो हो इंसान।"
"है माद्दा तो हक मांगो तुम
छीना जिसने, तुम अंजान,
पढ़ो, पढ़ाओ, ज्ञान बढ़ाओ
समझो अपना हिन्दुस्तान।"

57.
“आज का विद्यालय”

(2024)

“ज्ञान मिला था वट के नीचे
खुले मंच देता था ज्ञान,
गुरुजन तेरा चरण पखारूँ
दो हमको ऐसा वरदान।”
“मोल-भाव में बँटा ज्ञान है
बहुजन है अनजान,
बड़ी-बड़ी गाड़ी में बैठे
गुरु को आज प्रणाम।”
“विद्यालय से भाग ज्ञान अब
पहुँचा मोंटेसरी धाम,
दूँगा उतनी बुद्धि तुमको
जितना दोगे दाम।”
“दाम नहीं मेरे वश गुरु जी।
करो देशहित में कुछ काम,
जहाँ अशिक्षित जनसमूह हो
नहीं देश होता बलवान।”

58.
“कवि – धर्म”

(2025)

“भाषाविद्, नेता, अभिनेता
किस पर जनता को हो आस?
कविता एक सुनाकर तुमने
जीता है जन का विश्वास।”
“सभ्य सन्त के बीच धर्म पर
देते हो सभ्यों को उपदेश,
देश–दशा को दीन देखकर
बच्चों को भेजा परदेश।”
“किस मुख लेते नाम राम का
जिसमें वसता है कालकूट,
समरसता, नैतिकता जिनके
कार्यों में दिखता है अकूत।”
“लोभ–मोह के फंदे में तुम
भूल गए जी ‘कुंभनदास’,
तुलसी–बाबा तुमको लखकर
आज खड़े जग–मध्य उदास।”
“पाओगे उतना ही जग में
जितना दोगे जन का साथ,
सत्ता–सुख पाने को आकुल
मत कर उल्टी–सीधी बात।”

“सदी नई में बासी बातें
करते हो बनकर अनजान,
बेटी तेरी हो या मेरी
उसकी भी कुछ कर लो ध्यान।’’
“सीता जी को पूज्य बताकर
‘मीरा का मत कर अपमान,
राधा–कृष्ण नाम प्रेम का
जग को है उनपर अभिमान।’’

59.
“मनुज! अब तुमको है धिक्कार”

(2023)

“मनुज! अब तुमको है धिक्कार!
त्रेतायुग में परित्याग कर
नारी पर उपकार किया,
द्वापर में तुम चीरहरण कर
अबला पद साकार किया,
कलियुग में आते ही तुमने
मणिपुर में उद्धार किया।
मनुज! अब तुमको है धिक्कार!”
“मनु जी रोते होंगे अब तो
शतरूपा होंगी बेहाल,
किस मानव को जन्म दिए हम?
बना आज जी का जंजाल।”

60.
"कलियुग में सत्य युग"

(2025)

"शोभित होते थे विद्वद्वर
बन नवरत्न और उदार,
प्रज्ञा-फल पाता था पुष्कल
जन पाता था प्रेम-फुहार।"
"रहा न राजा, कवि-गण दुर्लभ
चारण पाता है उपहार,
मनोकामना पूर्ति में वह
राजा को पहनाता हार।"
"भजन' 'भोग में मोहन सोहन'
राधा-कृष्ण खड़े दरवार,
मोद-मुदित शंकर जी बैठे
द्रुपद-सुता-कर है सरकार।"
"संगम है देवों का अद्भुत
रामराज्य की क्या दरकार?
सतयुग है साक्षात् दीखता
मान्धाता तेरे घर-द्वार।"
जय हो, जय हो, कविवर जय हो
भारत-भू के तुम विश्वास,
इप्सित वर पाओगे निश्चय
करो राम पर तुम अब आस।"

61.
“श्रीमराम मन्दिर और ताजमहल’’

(2025)

“सुना अभी सद्‌य: कवि’ मुख से
एक कब्र और दूजे शान,
बदल रहा इतिहास पुरातन
बच्चों! सुन लो नूतन ज्ञान।’’
“डाटा’ नव बतलाकर भाई!
दर्शक पर देता व्याख्यान,
कवि होकर एकधर्मी लगते
लगता सूख रहा है ज्ञान।’’
“समदर्शी, त्रेता-विज्ञाता
कण-कण वासी है श्रीराम,
तुलना करके तुमने कविवर!
किनका नाम किया बदनाम?’’
“किस तृष्णा-वश रसना तेरी
चारण-वत् चलती है चाल?
है विश्वास’ जगत् में भाई!
देखा कभी न कवि का हाल?’’

62.
“सान्ता शान्त रहो अपने घर’’

(2025)

“सान्ता शान्त रहो अपने घर
मेरे घर है क्या दरकार?
नहीं चाहिए लाल टोपियाँ
क्या लेकर होगा उपहार?’’
“सन्त निकोलस’ तुम हो सच्चे
नहीं हमारे अब हैं बच्चे,
अमरुद, आम, शरीफा खाते
भारत के सब बच्चे कच्चे।’’
“टॉफी, चॉकलेट तुम्हें मुबारक
हम खाते बाबा-परसाद,
तुर्की जन्म, ‘मायरा’ भूमि
यूएस में तेरा नाम-प्रसाद।’’
“कोटि-कोटि देवों की भूमि
नहीं सुहाता तेरा वास,
रचते हम इतिहास नया अब
नहीं प्रतीची पर विश्वास।’’
“बालदिवस’ मेरे घर मनता
योगदिवस आकाश चढ़ा,
बच्चे-बच्चे आज खलीफा
हमें नहीं इतिहास पढ़ा।’’

63.
“अरावली के आँसू”

(2025)

“मानव-जीवन से भी पहले
है मेरा इतिहास,
किसने जी-भर मुझे रूलाया।
नहीं मिटेगी तेरी प्यास।”
“देख रही मैं पश्चिम से
दिल्ली तक का हर वास,
रोती ‘बूढ़ी अरावली’ यह
बन्द करो परिहास।”
“गर मैं ना होती तो बच्चे
हो जाता सत्यानाश,
धूल-आँधी-जल-वन्य-जीव का
निश्चिम एक विनाश।”
“मेरे वस्त्र चुराये तुमने
तोड़ी मेरी टांगे,
वक्त अभी है, होश में आओ
तोड़ो मत मेरी जांधे।”
“मेरे आँसू से जल बरसे
साबरमती, लूनी आबाद,
गुरूशिखर की गरिमा जानो
कर मत अब दिल्ली बर्बाद।”

“जिसने दर्द दिये है भाई!
मैं भविष्य की आस,
प्रकृति-प्रेम से उभरा-जीवन
करो न इसका नाश।’’
“प्राची होगा एक मरुस्थल
नहीं बचेगी-नद-नदियाँ,
मैं बूढ़ी ‘अब क्या कर सकती?
नहीं खिलेगी गुल-कलियाँ।’’

64.
“दुर्लभे! तेरी याद रुलाती है’’

(2024)

“तेरी याद रुलाती है,
आगे-पीछे हरदम रहकर
रस-रंगों का पोषण लेकर
मन ललचाती है,
तेरी याद रुलाती है!’’
‘मत मारो, मत मारो नानू!
हृदय-विदारक लगता है,
तेरी वाणी, करतब तेरा
चैन भगाती है,
तेरी याद रुलाती है!’’
“घर सूना तेरे बिन लगता
मन व्याकुल हरदम है रहता,
तुमने उस पथ पर है ठेला
जहाँ जान न जाती है,
तेरी याद रुलाती है।’’
“माफी मैं क्या माँगू तुमसे?
कर्जदार हूँ तेरा मन से,
याद कभी कर लेना भ्रम से
नींद न आती है,
तेरी याद रुलाती है।’’

65.
“उपालम्भ’’

(2025)

“उपालम्भ-उद्भूत-उपस्थित
पढ़ा प्रबल कवि-कर्म,
कालिदास, बाबा तुलसी गण
क्या जानूँ रत्नाकर-मर्म?’’
‘एक हकीकत’ भी को मानो
उसी तरह का जन्म,
नहीं ज्ञान-विज्ञान जानता
जानूँ ना कवि-धर्म।’’
“अनुभव का पादप यह नूतन
नहीं ज्ञान का स्रोत,
जो कुछ देखा, सुना धरा पर
‘एक हकीकत’ मेरी खोज।’’

66.
“एक श्रद्धांजली’’

(दिसम्बर 2025)

“भारत-भू को त्याग चला
एंजेल चकमा एक लाल,
चिंकी, ‘चीनी’ ‘मोमो ने भाई!
दिखलाया एक कमाल।’’
“लगा दाग वर्षांत कृष्ण यह
धूम मचेगा अब नव वर्ष,
युवा तड़प कर पान किया विष
धर्म-देश का देखो हर्ष।’’
“किसने मारा ज्ञान देश का
ध्वस्त किया सब तंत्र,
नस्लभेद जतलाने वाला
कभी न था जनतंत्र?’’
“त्रिपुर-लोक का वासी था वह
गई जान सुरलोक,
नये देश की नई सोच में
ऐसे ही जाते यमलोक!
“खूब लगाओ सुन्दर नारे
असि चमकाओ तुम आकाश,
खैर मनाओ, एक दिन होगा
तेरे सदन प्रकाश।’’

67.
“शाहरूख क्या है चीज?”

(जनवरी 2026)

“भद्राचार्य महंत देश का
धर्म-ध्वजा के वाहक सन्त,
ज्ञानपीठ-पुरस्कृत बाबा
राजनीति-वाचक हैं, हन्त!”
“सनातनी कहते हैं खुद को
कहते ब्राह्मण भी हैं नीच,
मुस्लिम से परहेज प्रकृति वश
शाहरूख क्या है चीज?”
“बंग-खिलाड़ी दूषित होते
उनकी क्यों है मांग?
बाबा गर इक नजर फेर दे
हाथों में है चांद।”
“सन्तों की भी होती लड़ाई
कौन बड़ा? है छोटा कौन?
मैं अज्ञानी समझूँ कैसे?
इसीलिए रहता हूँ मौन।”
“अच्छा होता, एक परीक्षा
सन्तों की भी होती?
लोग जानते सही सन्त को
‘पीली’ होती मेरी धोती।”